



प्रतिवेदन

पंचदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी
राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में चरित्र
निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास
07-11 अक्टूबर, 2022

संयुक्त आयोजक
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली
भारतीय भाषा समिति, नई दिल्ली
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, उत्तर प्रदेश

आमंत्रण
उद्घाटन सत्र



पंचदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी
**राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में
चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास**



सान्निध्य
प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी
माननीय कुलाधिपति
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर



सारस्वत वक्ता
श्री अतुल कोठारी
राष्ट्रीय सचिव
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, दिल्ली



अध्यक्षता
प्रो. नीलिमा गुप्ता
माननीय कुलपति
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

सारस्वत उपस्थिति



प्रो. कपिल देव मिश्रा
माननीय कुलपति
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर



प्रो. चौद किरण सलूजा
संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान
नई दिल्ली



प्रो. राजनाथ यादव
माननीय कुलपति
पूर्णिया विश्वविद्यालय, पूर्णिया (बिहार)

:: दिनांक ::

7 अक्टूबर, 2022
(आश्विन शुक्ल द्वादशी - कार्तिक कृष्ण द्वितीया
विक्रम संवत् 2079)

:: समय ::

प्रातः 11:00 बजे से

:: स्थान ::

स्वर्णजयन्ती सभागार
विश्वविद्यालय परिसर

कार्यक्रम में आपकी गरिमामयी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

संयुक्त आयोजक

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, दिल्ली



डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वाधान में चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास पर पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी का उदघाटन विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में हुआ। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी के सारस्वत सान्निध्य में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुल कोठारी सारस्वत वक्ता के रूप उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति अध्यक्षता प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की। समारोह में रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर के कुलपति प्रो. कपिलदेव मिश्रा, संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान, नई दिल्ली से प्रो. चाँद किरण सलूजा एवं पूर्णिया विश्वविद्यालय, बिहार के कुलपति प्रो. राजनाथ यादव की सारस्वत उपस्थिति रही। साथ ही स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ अजय तिवारी, म. प्र. हिन्दी ग्रन्थ



अकादमी के अध्यक्ष श्री अशोक कड़ेल, छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो अम्बिकादत्त शर्मा भी मंचासीन थे। ज्ञान की देवी सरस्वती एवं डॉ गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ संगोष्ठी का शुभारम्भ हुआ। प्रो अम्बिकादत्त शर्मा ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि यह भारत के निर्माण की कार्यशाला है जिसका निश्चित लक्ष्य है। इस कार्यशाला की शुरुआत से ही विश्वविद्यालय के स्नातक से शोध पाठ्यक्रम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के वैल्यू एडेड पाठ्यक्रम लागू हो जाएगा। डॉ. शशिकुमार सिंह ने पांच दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा और सत्रों का संक्षिप्त विवरण दिया।

भारतीय बोध के साथ हो चरित्र एवं व्यक्तित्व निर्माण: कुलाधिपति

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने कार्यशाला के विषय को आज के समय में महत्त्वपूर्ण बताया। डिजिटल युग में भारतीय बोध के साथ व्यक्तित्व निर्माण करना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति में व्यक्तित्व के समग्र विकास और चरित्र निर्माण के विषय में उल्लिखित बिन्दुओं पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि नीति के क्रियान्वन हेतु पहली बार भारतीय भाषा, बहुविद्यावाद, व्यवसायवाद को प्रमुख रूप से इस नीति में रखा गया है। इससे परीक्षण पद्धति में सुधार होगा। उन्होंने कहा कि सभी विश्वविद्यालय को भारतीय शिक्षा पद्धति के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करनी चाहिए।



डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय बने भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन का उत्कृष्ट केंद्र- डॉ. कोठारी



डॉ. अतुल कोठारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत में व्यक्तित्व को चरित्र के आधार पर नापा जाता है। उन्होंने कहा कि देश और दुनिया में हो रहे पर्यावरण, नैतिक मूल्यों के हास, हिंसा, हत्याएं, महिलाओं का उत्पीड़न आदि समस्याओं का मूल कारण चरित्र का संकट है। हमें इस कार्यशाला में समस्या की नहीं, समाधान पर केन्द्रित चर्चा करनी है और उसका आधार चरित्र का निर्माण है। प्रश्न यह है कि चरित्र निर्माण हो कैसे? अच्छी आदतें मूल्य हैं। मूल्यों को जो जीवन में धारण करता है, वह नैतिकता के रास्ते पर अग्रसर होता है और वही चरित्रवान नागरिक होता है। छोटा बालक देख-देखकर सीखता है। धीरे-धीरे उनकी वह आदत बनती है। लंबे समय तक

आदत रहने से वह उनका स्वभाव बनता है, वही चरित्र कहलाता है. उन्होंने व्यक्तित्व विकास के भौतिक और आध्यात्मिक दो पहलू बताते हुए कहा कि 64 कलाओं आदि की शिक्षा भौतिक विकास है, आंतरिक विकास आध्यात्मिक है. पंचकोशीय विकास में दोनों का समन्वय है. राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा के हर स्तर पर समावेश की बात कही गई है. इसी में दुनिया की अधिकतर समस्याओं का समाधान निहित है. इसका केंद्र बिंदु डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय बन सकता है.

भारतीय चिंतन परंपरा में व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण स्थान- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि भारत में पहली बार इस तरह की पांच दिवसीय कार्यशला का आयोजन हो रहा है. करीब 7 राज्यों से यहां प्रतिभागी उपस्थित हुए हैं. कोविड के समय से ही इसके क्रियान्वन पर सतत चर्चा हो रही है. उन्होंने कहा कि भारतीय चिंतन परंपरा में व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण स्थान है. आज के समय में विद्यार्थियों में श्रेष्ठ गुणों का समावेश होना चाहिए. इन गुणों में संतुलन, उत्तम विचार एवं आत्म विश्वास ऐसे गुण हैं जो चरित्र निर्माण करते हैं. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण विद्यार्थी डिग्री के साथ समाज में उत्तम चरित्र के साथ प्रवेश करे क्योंकि समाज से ही देश बनता है. उन्होंने इसी के अंतर्गत गौर जयंती के अवसर पर छात्र छात्रों द्वारा परोपकारी कार्य करने पर उन्हें उत्तम चरित्र दर्शाने के लिए पुरस्कृत करने की बात कही. उन्होंने विश्वविद्यालय में चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास संबंधी गतिविधियों के बारे में भी बताया.



प्रो कपिल देव मिश्रा ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने विद्यार्थियों के एक हाथ में ज्ञान और कौशल को रखा है. वही दूसरे हाथ में चरित्र और आचरण को. उन्होंने शिक्षा के उद्देश्य को बताते हुए कहा की पुराने ज्ञान को आगे बढ़ाने, नए ज्ञान के सृजन के साथ विद्यार्थी को समसामयिक चुनौती के लिए बौद्धिक तौर पर तैयार करना है जो इस शिक्षा नीति के माध्यम से क्रियान्वित हो रहा है. उन्होंने कहा की व्यक्तित्व विकास को पंचकोश आधार पर ही पूर्ण माना जाता है जिसमें अन्नमय से पोषण, प्राणमय से बल, मनोमय से विज्ञान और आनंदमय से आध्यात्मिक विकास तक के चरण होते हैं और स्वामी विवेकानंद के अनुसार आध्यात्मिक विकास ही भारत की आत्मा है.

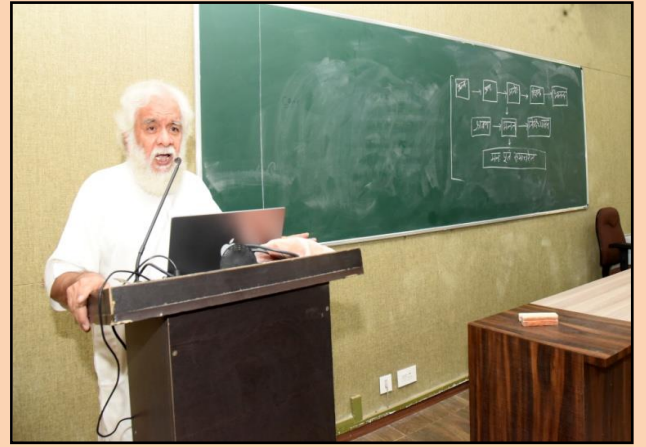
प्रो. राजनाथ यादव ने भारत में शिक्षा नीतियों का क्रमशः इतिहास बताते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के विविध आयामों को बताया. उन्होंने कहा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वन के लिए उसको गहराई से समझना आवश्यक है. उन्होंने बहुविद्या, 5+3+3+4 प्रणाली, शोध के लिए संस्थान, विदेशी विश्वविद्यालय के कैंपस भारत मे स्थापित करना आदि के महत्व को रेखांकित किया.





प्रो चांद किरण सलूजा ने अपने उद्बोधन में कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रथम अध्याय के अंत में स्पष्ट है कि बच्चे को शिक्षक एवं अभिभावक मिलकर उसकी संवेदनशीलता के साथ पहचाने और फिर उसके विकास के बारे में सोचे. हमें शिक्षा के द्वारा व्यक्ति को अच्छा इंसान और उसके समग्र विकास पर जोर देना चाहिए. दिशायुक्त वृद्धि ही विकास है.

शिक्षा नीति पंचकोश विकास को धारण करने के लिए अग्रसर है. उन्होंने इक्कीसवीं सदी की शिक्षा के चार आधारभूत स्तंभ को समझाया और कहा कि ज्ञान की प्राप्ति के बाद उसको व्यवहार में बदलना होगा. व्यावहारिक शिक्षा प्राप्ति के बाद वह मिलकर रहना सिखाती है जो जीवन के उद्देश्य प्राप्त करने में सहायक होती है और अंततः शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य बनाना होता है. उन्होंने कहा कि हमारी सोच का प्रतिबिम्बन हमारे चरित्र में होता है. हम एकांत में जो कार्य करते हैं वही हमारा चरित्र निर्धारित करता है.



श्री मनोहर भंडारी ने 'अन्नमयकोश' विषय पर बोलते हुए कहा कि अन्न से उत्पन्न, अन्न के आधार एवं अन्न से पुष्ट को अन्नमय कोश कहते हैं. अन्न से ही शरीर स्वस्थ होकर इंद्रिय चेतना को सशक्त करता है जिससे सभी क्रियाएं होती हैं. मन के अस्वस्थ होने से भोजन भी प्रभावित होता है और इससे अन्नमयकोश पर भी प्रभाव पड़ता है. आज छोटी उम्र में ही इम्यून सिस्टम कमजोर हो रहा है जिसके कारण व्यक्ति कम आयु में ही ऐसे रोगों के शिकार हो रहे हैं जो 60 वर्ष के बाद होते हैं. इन सबका संबंध अन्नमयकोश से है, क्योंकि आहार से ही इम्यून सिस्टम सशक्त होता है. शुद्ध सात्विक आहार और आयुर्वेद अनुसार दिनचर्या का पालन कर के हम इसे प्राप्त कर सकते हैं. उन्होंने कहा कि ब्रह्ममुहूर्त में उठे. जीवन एक प्रयोगशाला है, स्वयं के जीवन में प्रयोग करें.

डॉ अजय तिवारी ने कहा कि प्राण ही सब कुछ है. उन्होंने प्राण को मनुष्य की क्षमता के साथ जोड़कर देखा और कहा कि प्राण ही है जो हमें संचालित करता है. प्राण ही सभी क्रियाओं को संचालित करता है. प्राण के बिना मनुष्य मृतप्राय माना जाता है. प्राण अस्तित्व का मूल आधार है. चेतना और चिंतन की दशा और दिशा प्राण पर केंद्रित है.

सांस्कृतिक कार्यक्रम- विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा – डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के ललित कला एवं प्रदर्शनकारी विभाग तथा संगीत विभाग के विद्यार्थियों द्वारा कलात्मक दृष्टि से उच्च स्तरीय सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए. जिसमे



विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक परिषद के समन्वयक डॉ राकेश सोनी द्वारा लिखित एवं निर्देशित स्किट 'जूते' का मंचन हुआ. इसके बाद संगीत विभाग के विद्यार्थियों द्वारा 'कन्हैया तुम्हे कुछ याद है हमारी' कव्वाली प्रस्तुत की गई. सांस्कृतिक कार्यक्रम का समापन बुंदेलखंड की पारंपरिक नृत्य बधाई के साथ हुआ.



द्वितीय दिवस

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास पर पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी के द्वितीय दिवस का प्रथम सत्र चरित्र निर्माण गीत निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र निर्माण न भूलें..... के साथ आरम्भ हुआ. इस सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. बिहारी लाल शर्मा थे एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ श्री अतुल भाई कोठारी जी ने की.

चरित्र निर्माण में सात्विक आहार एवं सत्य आचरण की महत्वपूर्ण भूमिका : प्रो बिहारी लाल शर्मा

प्रथम सत्र के मुख्य वक्ता लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय दिल्ली के प्रो. बिहारी लाल शर्मा रहे इस तकनीकी सत्र की अध्यक्षता श्री अतुल भाई कोठारी ने की इसके समन्वयक डॉ नौनिहाल गौतम रहे और प्रतिवेदक श्री गोविंद सिंह रहे मुख्य वक्ता ने अपने वक्तव्य में पंचकोश की आध्यात्मिक दृष्टि पर बात की उन्होंने मानव के चरित्र निर्माण हेतु धर्म पर बल देने की बात की और साथ ही भारतीय शिक्षा में पाश्चात्य प्रभाव के कारण उत्पन्न दोषों को रेखांकित करते हुए भारतीय सनातन परंपरा के मुख्य बिंदुओं को भूल जाने की



प्रवृत्ति की आलोचना की साथ ही 1835 ई. के पश्चात की आधुनिक शिक्षा नीति के नाम पर अपने आत्मगौरव को भुलाकर पश्चात्य चिंतन की ओर आकृष्ट होने के दुष्परिणामों को भी उन्होंने अपने चर्चा में शामिल किया. जो भारतीय जीवन दर्शन हेतु हानिकर साबित हुई.

उन्होंने कहा की किसी भी उत्तम राष्ट्र का निर्माण वहाँ के उत्तम चरित्र वाले व्यक्तियों से होता है परंतु आज हम साक्षर तो हो रहे हैं परंतु शिक्षित नहीं हो रहे हैं. यह अपने आत्मगौरव को भूलने का

परिणाम है... उन्होंने मनुष्य के चरित्र निर्माण हेतु धर्म को आवश्यक बताया और मनु के द्वारा की गई धर्म की व्याख्या की चर्चा की जिसका अनुसरण करके व्यक्ति एक श्रेष्ठ इंसान बन सकता है. और इसका पालन संपूर्ण संसार हेतु उपयोगी साबित होगा. इसके अतिरिक्त पंचकोश का विकास होने से वाले व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के संबंध में बताया उन्होंने अत्यधिक व्यापक ढंग से पंचकोश विभिन्न पक्षों पर बात करते हुए वर्तमान में युवाओं व देश के नागरिकों में उनके चरित्र निर्माण हेतु इसकी आवश्यकता पर बात की. अध्यक्षीय वक्तव्य श्री भाई अतुल कोठारी ने दिया.



मुख्य वक्ता के रूप में द्वितीय तकनीकी सत्र में संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान नई दिल्ली के प्रो. चाँद किरण सलूजा ने अपना वक्तव्य मनोमय कोश पर दिया. सत्र की अध्यक्षता प्रो. नागेह दुबे ने की. प्रो. सलूजा ने मनोमय कोश के संबंध में नई शिक्षा नीति के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की. उन्होंने मनोमय कोश के सैद्धांतिक और व्यवहारिक पक्षों पर चर्चा करते हुए कहा कि मन पर नियंत्रण के द्वारा हम अपने जीवन को उचित मार्ग की ओर अग्रसर कर सकते हैं. साथ ही इसके द्वारा व्यक्तित्व का समग्र विकास

हो सकता है. व्यक्ति मन के उचित प्रयोग द्वारा अपने जीवन को नियंत्रित कर के सकारात्मक कार्यों को पूरा कर सकता है. उन्होंने गीता के विभिन्न श्लोकों और अर्जुन का उदाहरण भी दिया. सत्र संचालक डॉ. संजय यादव थे और प्रतिवेदक आकांक्षा नामदेव थीं.

तामसिक प्रवृत्ति चारित्रिक अवमूल्यन का बड़ा कारण- डॉ. मनोहर भंडारी

तृतीय सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में इस तकनीकी सत्र में डॉ. मनोहर भंडारी, इंदौर ने अपना वक्तव्य दिया. डॉ. भंडारी ने कहा कि चिकित्सा शिक्षा में अवलोकन और मनोविज्ञान की शिक्षा आवश्यक है लेकिन हमारे देश का दुर्भाग्य है कि चिकित्सा शिक्षा में आज भी मनोविज्ञान की शिक्षा नहीं दी जाती है. यही कारण है कि मानव जीवन में पंचकोश अत्यंत महत्वपूर्ण है. उन्होंने कहा कि हम जब भी किसी जीव की हत्या करते हैं तो उससे कुछ तामसिक प्रवृत्ति के रस विसर्जित होते हैं. तामसिक प्रवृत्ति के ये रस उस मांस का सेवन करते हुए हमारे शरीर में आते हैं और यही कारण है कि मनुष्य में हम चारित्रिक अवमूल्यन देख रहे हैं. इसलिए हमें शाकाहार करना चाहिए. अन्नमय कोश से आनंदमय कोश तक की यात्रा को उन्होंने विस्तार से समझाते हुए उन्होंने कहा कि अन्नमय कोश हमें निरोग रखता है, प्राणमय कोश हमें साहस प्रदान करता है, मनोमय कोश बुद्धिमत्ता का कारक है, विज्ञानमय कोश उदारता देता है तथा आनंदमय कोश हमें संकट से ही मुक्त कर देता है. कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ. अजय तिवारी ने कहा कि पंचकोश को हम सभी प्राध्यापकों को अपने कक्षाओं में बच्चों तक लेकर जाना चाहिए.

लोकतांत्रिकता शिक्षा की सबसे बड़ी विशेषता: अतुलभाई कोठारी

चतुर्थ सत्र में मुख्य वक्ता डॉ अतुल कोठारी ने आनंदमय कोश की अवधारणा को व्याख्यायित किया. अध्यक्षता विवि की कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने की. उन्होंने कहा कि आनंदमय कोश हमें समग्रता की ओर ले जाता है. पूरी पंचकोश की प्रक्रिया स्वयं को पहचानने की प्रक्रिया है. आम तौर पर इस पर चर्चा नहीं होती लेकिन यह अपने आप में शरीर का विज्ञान है. उन्होंने कहा कि मनुष्य के भीतर इतनी क्षमता है कि वह हर समस्या का समाधान ढूंढ सकता है लेकिन कई बार वह भीतर के बदले बाहर समाधान ढूंढता है. इसलिए समाधान मिलता नहीं है. वह अपनी क्षमता को नहीं पहचान पाता. इसलिये व्यक्ति को सबसे पहले स्वयं को पहचानने की आवश्यकता है. इसके लिए मन को एकाग्र करना पहला चरण है. यह प्रवृत्ति मनुष्य को स्वयं अपने भीतर लानी चाहिए. दबाव से मन में एकाग्र भाव नहीं आता. शिक्षा में लोकतांत्रिकता इसकी सबसे बड़ी विशेषता है. उन्होंने कहा कि शिक्षा में अनुभव एवं प्रयोग की पद्धति को सम्मिलित करना चाहिए.



स्वयं की पहचान कर हम ज्यादा सफल व्यक्ति बनेंगे- कुलपति



सत्र की अध्यक्षता करते हुए विवि की कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने कहा कि मन को व्यवस्थित रखने में और दैनिक चुनौतियों का सामना करने में ओमकार की ध्वनि सहायक होती है. श्वसन क्रिया को ठीक रखने में भी यह सहायक होता है. उन्होंने कहा कि जहां समस्या है, वहां समाधान भी होता है. हमें समाधान पर बात करनी चाहिए. जितने समय में हम दूसरों को पहचानने की कोशिश करते हैं, उतने समय में स्वयं को पहचानने उससे ज्यादा सफल व्यक्ति बनेंगे. हम भारतीय संस्कृति से जुड़े. शिक्षा के द्वारा भारतीयता और भारतीय संस्कृति को वापस लाने का प्रयास शिक्षा नीति द्वारा हो रही है. उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि आज कल हर अवसर पर केक काटना प्रचलन में है जो पाश्चात्य पद्धति है. हमारी संस्कृति हमें जोड़ना सिखाती हैं, काटना नहीं. स्वयं चरित्रवान बनें तभी आप दूसरों को भी चरित्र के बारे में सिखा पाएंगे. कार्यक्रम का संचालन डॉ. शशि कुमार सिंह ने किया.

तृतीय दिवस

जीवन में सिद्धांत एवं व्यवहार का समन्वय आवश्यक : डॉ. अतुल कोठारी

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास पर पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी के तृतीय दिवस का प्रथम सत्र परिचर्चा सत्र के साथ आरम्भ हुआ. कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, डॉ. अतुलभाई कोठारी और अशोक कड़ेल जी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे.



कहा कि इन प्रयासों के साथ अन्य नए नवाचार की भी आवश्यकता है. इसके साथ ही जो प्रयास अन्य विश्वविद्यालयों में भी हो रहे हैं उन्हें हमें अपने विश्वविद्यालयों में भी करना चाहिए. देश भर से आए हुए दर्जनों प्रतिभागियों ने चरित्र निर्माण के लिए किए जा रहे अनेक सुंदर प्रयासों का उल्लेख किया. कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि व्यक्ति अपने ज्ञान एवं मानवीय चेतना के आधार पर अपने व्यक्तित्व और चरित्र का निर्माण करता है.



कार्यशाला एवं संगोष्ठी में आप सबकी सक्रिय सहभागिता ने हमारे इस आयोजन के प्रयोजन को सार्थक और प्रगाढ़ कर दिया है. यहां सभी ने कुछ न कुछ नया सीखा है, और आपके अनुभवों से हमें भी एक दिशा मिली है. निश्चित रूप से आपके साथ यह आयोजन महत्वपूर्ण और यादगार हो गया. कार्यशाला के नवें सत्र में देश भर से आए हुए अनेक प्रतिभागियों ने कार्यक्रम के संबंध में स्वयं के अनुभव साझा किए. इसमें एनआईटी पटना से योगेश, इंदौर से दिनेश दवे, बिलासपुर से परमेश्वर वाजपेई, सागर से डॉ. बुद्ध सिंह सहित कई प्रतिभागियों ने अपने अनुभव के साथ ही अपने अपने सुझाव भी साझा किए. इसके उपरांत विभिन्न प्रांतों से आए हुए प्रतिभागियों ने चरित्र निर्माण पर कार्यक्रम के संबंध में अपनी आगामी योजनाओं की भी चर्चा की. इसके उपरांत सत्र में कार्यक्रम के सूत्रधार डॉ. अतुल कोठारी जी ने शिक्षण अधिगम में नवाचार,

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का अध्ययन तथा चरित्र निर्माण पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने का आह्वान किया. उन्होंने अनेक उदाहरणों से यह समझाने का प्रयास किया कि भारतीय ज्ञान परंपरा में आत्मावलोकन ही चरित्र निर्माण के मूल में है. सत्र की अध्यक्षता डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने किया. सत्र का संचालन डॉ. नौनिहाल गौतम ने किया. कार्यशाला में देश भर से लगभग 300 प्रतिभागी सम्मिलित हुए.

डॉ. अतुल कोठारी ने प्रतिभागियों द्वारा दिए गए सुझावों का सम्यक चर्चा की. अनेक सुधारों को आगे की कार्यशालाओं में अमल में लाने का आश्वासन दिया. कोठारी जी ने कहा कि जीवन और जगत में वास्तविक परिवर्तन क्रमश होता है. इसमें कोई हड़बड़ी नहीं करना चाहिए. सबसे बड़ा कदम तो यह है कि परिवर्तन के लिए सबसे पहले स्वयं को प्रस्तुत करना चाहिए. शिक्षा में भारतीयता की उपलब्धि छोटी-छोटी बातों को अपने आचरण एवं व्यवहार में लाने से होगी. इसका क्रमबद्ध रूप से एवं लोकतांत्रिक प्रक्रिया से पालन करना होगा. अपराह्न सत्र में देश भर के शोधार्थी और अकादमिक विद्वानों ने अपने शोध-पत्रों का वाचन किया.

पोस्टर प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागी हुए पुरस्कृत

कार्यशाला में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और चरित्र निर्माण और भारतीय परंपरा पर केंद्रित पोस्टर का निर्माण किया. प्रतियोगिता में अभिषेक उपाध्याय प्रथम, कृष्णा गौड़ द्वितीय और आर्या जैन तथा स्वीटी सोनी तृतीय स्थान प्राप्त किया. विजयी प्रतिभागियों को मंचासीन अतिथियों द्वारा पुरस्कृत किया गया.



चतुर्थ दिवस

**विश्वविद्यालय: राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी में हुए विविध व्याख्यान
भारत आरम्भ से बहुभाषिक राष्ट्र रहा है : प्रो.अंबिकादत्त शर्मा**

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास एवं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में भारतीय भाषा में शिक्षण अधिगम एवं पाठ्य सामग्री निर्माण पर शोध संगोष्ठी में मुख्य वक्ता प्रोफे अंबिका दत्त शर्मा ने कहा कि गांधी स्वतंत्र भारत को अंग्रेजी से मुक्त करना चाहते थे और हिंदी या भारतीय भाषाओं को भारत में चाहते थे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय भाषा नीति या निरापद भाषा नीति का दावा करती है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में भाषा के नाम पर देश का आत्मविभाजन हुआ। ज्ञान के कुछ अनुशासनों का चरित्र राष्ट्रीय होता है। उन्होंने कहा कि अनुभूति, भाषा, भाषा का तर्कशास्त्र, अवधारणीकरण का तारतम्य बना रहना चाहिए। भारत देश का चरित्र आरंभ से बहुभाषिक रहा है। किसी भाषा की



समृद्धि उसकी बोलने वालों की संख्या से नहीं अपितु उसमें रचित वाग्मय में निहित ज्ञान से होती है। हमें नई शिक्षा नीति की भाषा नीति के क्रियान्वयन में लगना चाहिए। भारत में राज्यों का गठन भाषा के आधार पर हुआ था। इससे राष्ट्र की सर्वमान्य भाषा के रूप में हिंदी का स्थान विवादित हो गया। इससे भारत में भाषा की समस्या जटिल हो गई हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ाने के लिए कई संस्थाओं का निर्माण हुआ। भारतीय भाषा समिति के वरिष्ठ सलाहकार डॉ राकेश सिंह ने भारतीय भाषा समिति के चल रहे प्रकल्पों की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि भारतीय भाषाओं में निर्मित होने



वाली पाठ्य सामग्री के संदर्भग्रंथ क्या हों इस पर भी विचार की आवश्यकता है।

प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि लोक साहित्य में व्याप्त ज्ञान को पाठ्यक्रम में ग्रहण किया जाना चाहिए मंच पर लोक शिक्षण विभाग के संयुक्त संचालक (सागर संभाग) डॉ. मनीष वर्मा उपस्थित रहे संचालन डॉ. संजय शर्मा ने किया।

द्वितीय सत्र 'भारतीय भाषाओं में एकात्मकता एवं संवाद' विषय पर हुआ। मुख्य वक्ता डॉ. निरंजन सहाय ने अपने वक्तव्य के दौरान कहा कि भारत में अनेक भाषाएँ प्रेमपूर्वक सामंजस्य के साथ रहती रहीं। सरहपा की मातृभाषा उड़िया या बांग्ला थी। उन्होंने मगध के क्षेत्र में कार्य किया और तत्पश्चात वे कर्नाटक चले गए उन्होंने बांग्ला, मैथिली, कन्नड़ में साहित्य रचा इसमें एकात्मकता स्पष्ट होती है। भक्ति दक्षिण भारत में उपजी उसका उत्तर भारत में भी विस्तार हुआ। विभिन्न हिंदी के कवियों की रचनाओं में इसकी अभिव्यक्ति देखने को मिलती है, जिसमें संत कबीर का प्रमुख स्थान है। उन्होंने कहा कि तेलुगु भाषी वल्लभाचार्य संस्कृत में लिखते थे, और ब्रज वासियों से ब्रज भाषा में बात करते थे। गुजराती कवि महामति प्राणनाथ हिंदी में रचनाएं कर रहे थे, इस प्रकार भाषाएं एक दूसरे



का हाथ पकड़ कर चल रही थी. एक भाषा के कवि दूसरी भाषा में रचनाएं कर रहे थे, भाषाओं में परस्पर संवाद भी विद्यमान रहा है डॉ. मनीष वर्मा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि, भाषा निरंतर समृद्ध होनी चाहिए पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने के लिए परस्पर भाषाई संवाद आवश्यक है, उन्होंने पाठ्य पुस्तकों को समझाने के लिए स्थानीय भाषाओं के शब्दों के प्रयोग पर बल दिया. विविधता में एकता भारत की शक्ति है, विविधताओं का सम्मान किया जाना चाहिए, स्वाध्याय को बढ़ाने के प्रयास किए जाने चाहिए. इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. मनीष वर्मा ने की. संचालन डॉ. शशिकुमार सिंह ने किया.



तृतीय सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने 'भाषा शिक्षण की रणनीति' पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भाषा शिक्षण का तरीका कक्षाओं के स्तर के साथ बदलता रहता है. बच्चों में भाषा की संस्कृति का बोध विकसित करना. प्राचीन साहित्य और लोक साहित्य की वर्तमान सन्दर्भों में व्याख्या की जानी चाहिए. भाषाओं कभी समय के साथ रंग-रूप, तेवर बदलता रहता है. तकनीकी के कारण भी भाषा के लेखन का संकट या चुनौती उपस्थित हुई है. विद्यार्थियों के श्रुतलेखन, अर्थबोध, कल्पना बोध, सृजनात्मकता को बढ़ावा दिया जाना चाहिए. भाषा के शिक्षण में

हमारी संस्कृति का प्रतिबिम्बन होता चाहिए. नवीन शब्दावलिओं, पारिभाषिक शब्दों के प्रति जागरूक रहकर उनका ज्ञान प्राप्त करना चाहिए.

सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. निरंजन सहाय ने की. प्रो निरंजन सहाय ने कहा कि भाषा कभी बिगड़ती नहीं है, बदलती है. उसका स्वरूप बदलता है. इससे उसके मानक भी बदलते हैं. विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. राकेश सिंह उपस्थित रहे. संचालन डॉ. धर्मेन्द्र कुमार सर्राफ ने दिया.



चतुर्थ सत्र में मुख्य वक्ता सुश्री विनीता काम्बरी, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार नई दिल्ली ने भाषा एवं अधिगम शिक्षण पर व्याख्यान दिया. कार्यक्रम के अंत में प्राश्नोत्तरी सत्र बहे आयोजित हुआ. सत्र की अध्यक्षता डॉ. राकेश सिंह, वरिष्ठ सलाहकार, भारतीय भाषा समिति, ने किया और सत्र संचालन डॉ संजय शर्मा ने किया. संगोष्ठी में मध्य प्रदेश के विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों के शिक्षक, प्राचार्य, विभिन्न प्रान्तों से आये हुए प्रतिभागियों से सहभागिता की.



औपनिवेशिक मानसिकता और व्यवस्था से मुक्ति राष्ट्रीय शिक्षा नीति का लक्ष्य- प्रो. कुमार रत्नम

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास एवं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में भारतीय भाषा में शिक्षण अधिगम एवं पाठ्य सामाग्री निर्माण पर शोध संगोष्ठी में समापन वक्तव्य देते हुए मुख्य अतिथि प्रो. कुमार रत्नम ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्माण में विश्व में सबसे बड़ा सैंपल साइज लिया गया. इतिहास, संस्कृति और संस्कारों का उल्लेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति की समग्रता को स्पष्ट करता है.



पूर्वतः शिक्षा व्यवस्था द्वारा औपनिवेशिक मानसिकता और व्यवस्थाओं का निर्माण हमारे मष्तिष्क में किया गया था उससे मुक्ति के प्रति राष्ट्रीय शिक्षा नीति अग्रसर है. भारत सदैव से राष्ट्रगुरु था और रहेगा. इस दिशा में समग्र विकास हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति की संरचना की गई है.

भारत भाषिक विविधताओं से संपन्न राष्ट्र है- प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति

अध्यक्षीय वक्तव्य में विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि पहले इस कार्यशाला की संकल्पना तीन दिवसीय की गई थी. सभी सत्र पूर्ण संख्या में सफलता पूर्वक संपन्न हुए. उन्होंने सभागार में उपस्थित श्रोताओं की संख्या को देख कर हर्षपूर्वक आभार



प्रस्तुत किया. उन्होंने कहा कि हम हिंदुस्तानियों के रग-रग में हिंदी भाषा समाहित है और हम हिंदी भाषा को सम्पूर्ण विश्व में प्रसारित करेंगे. एक दिन ऐसा अवश्य आएगा जब सम्पूर्ण विश्व में यह कहा जायेगा कि हिंदी भाषा का ज्ञान आवश्यक है. आज मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई भी हिन्दी माध्यम से किये जाने की नीति बन रही है. उन्होंने कहा कि भाषा का महत्व हमारे जीवन में हमेशा रहता है और हमारी अपनी भाषा ही हमें समृद्धि और विकास के रास्ते पर ले जा सकने में सक्षम है. भारतीय भाषा समिति के वरिष्ठ सलाहकार डॉ. राकेश सिंह ने कहा कि भारतीय भाषा समिति भारत की तमाम भाषाओं पर कार्य कर रही है जिसमें

235 भाषों पर कार्य आरंभ हो चुका है.

अंतराष्ट्रीय उपनिवेशिक तंत्र विलुप्त होती लिपियों के प्रति हमें भ्रमित करने का प्रयास कर रहा है. इससे हमें बचना होगा. भारतीय भाषाओं का भविष्य उज्ज्वल है. इस अवसर पर विवि के कुलसचिव संतोष सोहगौरा, कुलानुशासक प्रो. चंदा बेन भी मंचासीन थे.

व्याख्यान सत्र के मुख्य वक्ता प्रो निरंजन सहाय ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत में पांच परिवारों की भाषाएं बोली और बरती जाती है. ऐसा यह इकलौता देश है. 2011 की जनगणना के अनुसार 211 भाषाएं हैं. भारत में व्यवहार भाषा की समस्या कभी नहीं रही. भारत में प्रायः प्रत्येक व्यक्ति बहुभाषी हुआ करता है. स्वतंत्रता संग्राम के दौरान क्रांतिकारियों को व्यवहार भाषा हिंदी रही. उन्होंने भाषाओं के आधार पर राज्यों के निर्माण को ऐतिहासिक प्रक्रिया को समझाया. भाषायी आधार पर राज्यों के गठन हेतु आयोगों की आवश्यकता और उसके कार्यों को बताया. उन्होंने बहुभाषिकता, 8वीं अनुसूची, राजभाषा, राष्ट्रभाषा और

बोली पर विस्तार से चर्चा की. उन्होंने कहा कि भाषा के आधार पर ही बांग्लादेश का उदय और श्रीलंका में सिंहल और तमिल में कलह हुई. भाषा का मसला उसमे निहित संस्कृति और ज्ञान परंपराओं का भी मसला है. बच्चों को बोध कराने के लिए उनके भाषायी स्तर और मध्यम का ध्यान रखा जाना चाहिए. बहुभाषिकता हमारी कमजोरी नहीं बल्कि हमारी ताकत है.

सुश्री विनीता काम्बिरी ने कहा कि माइंड फुल नेस से की गई. रचनात्मकता सबसे बड़ा गुण तथा आवश्यकता है. अधिगम एकता नहीं है. शिक्षा प्रयोजन मूलक हो और ऐसी हो कि प्रशिक्षण से अपने कौशलों को निखार सकें. बच्चा जन्मजात से ही सिखाने वाला होता है. प्रोत्साहन से ही पढ़ने में बच्चा प्रवृत्त होते हैं. यह शिक्षक का उद्देश्य होता है. भाषा हमारी सोच को लगातार पुष्ट करती है. भाषा संप्रेषण से बच्चे तक पहुंचती है.

बैंक ऑफ़ बड़ौदा ने किया हिन्दी के मेधावी छात्रों को पुरस्कृत

समारोह में बैंक ऑफ़ बड़ौदा ने विश्वविद्यालय के हिन्दी विषय के मेधावी छात्रों को पुरस्कृत किया. बैंक ऑफ़ बड़ौदा के क्षेत्रीय



प्रबंधक संतोष कुमार एवं मंचासीन अतिथियों ने हिन्दी विषय के बालक और बालिका वर्ग के एक-एक मेधावी छात्र मुकेश पुवारे और लेखनी सुमन को पुरस्कार राशि का चेक और स्मृति चिन्ह प्रदान किया.

डॉ. आशुतोष को बैंक ऑफ़ बड़ौदा का बुंदेलखंड गौरव सम्मान

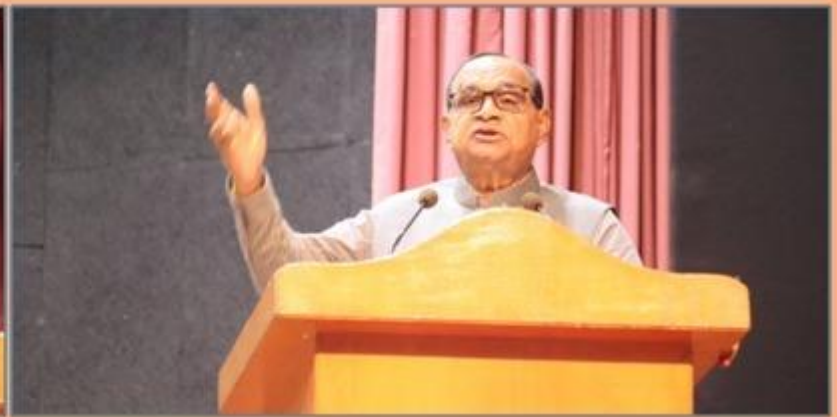
समारोह में बैंक ऑफ़ बड़ौदा ने डॉ आशुतोष, सहायक प्राध्यापक हिन्दी विभाग को उनके साहित्य में योगदान के लिए बैंक ऑफ़ बड़ौदा-बुंदेलखंड गौरव सम्मान प्रदान किया. इस अवसर पर उन्हें सम्मान राशि का चेक और प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया. संचालन डॉ संजय शर्मा ने किया और आभार डॉ. शशिकुमार सिंह ने प्रस्तुत किया.











प्रतिभागियों ने गिनाए चरित्र निर्माण के लिए किए जा रहे प्रयास

सागर (नवदुनिया न्यूज)। डा. हरिसिंह गौर विवि में चल रही पांच दिवसीय कार्यशाला के तीसरे दिन विभिन्न स्थानों से आए प्रतिभागियों ने चरित्र निर्माण हेतु किए जा रहे प्रयासों को गिनाया। इस दौरान चरित्र निर्माण एवं भारतीय परंपरा पर आधारित पोस्टर बनाए और उनका प्रदर्शन किया।

कार्यशाला में चौधरी बंसीलाल विवि हरियाणा से डा. धर्मवीर, स्वामी विवेकानन्द विवि सागर से डा. अजय तिवारी एवं डा. हरीसिंह गौर विवि सागर से डा. संजय शर्मा तथा शशि कुमार सिंह ने अपने अपने संस्थानों में चरित्र निर्माण हेतु किए जा रहे प्रयासों की प्रस्तुति दी। नशामुक्ति, गुणवत्तापूर्ण शोध के साथ साहित्यिक चोरी से मुक्ति तथा कैपस टू कम्प्युनिटी कनेक्ट प्रोग्राम के साथ चरित्र निर्माण के अन्य प्रयासों की चर्चा की गई। अध्यक्षता कर रही अटल बिहारी वाजपेई हिंदी विवि भोपाल के इंदौर अध्ययन केंद्र की संयोजक शोभा पैठणकर ने कहा कि



विश्वविद्यालय में चल रही राष्ट्रीय कार्यशाला में प्रतिभागियों ने पोस्टर बनाकर उनका प्रदर्शन किया। • नवदुनिया

इन प्रयासों के साथ अन्य नए नवाचार की भी आवश्यकता है। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि व्यक्ति अपने ज्ञान एवं

मानवीय चेतना के आधार पर अपने व्यक्तित्व और चरित्र का निर्माण करता है। एनआईटी पटना से योगेश, इंदौर से दिनेश

दवे, बिलासपुर से परमेश्वर वाजपेई, सागर से डा. बुद्ध सिंह सहित कई प्रतिभागियों ने अपने अनुभव के साथ ही अपने अपने

पोस्टर प्रतियोगिता के विजेता हुए पुरस्कृत

कार्यशाला में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और चरित्र निर्माण और भारतीय परंपरा पर केंद्रित पोस्टर का निर्माण किया। जिसमें अभिषेक उपाध्याय प्रथम, कृष्णा गौड़ द्वितीय और आर्या जैन तथा स्वीटी सोनी तृतीय स्थान पर रहे। विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया गया।

सुझाव भी साझा किए। अतुल कोठारी ने शिक्षण अधिगम में नवाचार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अध्ययन तथा चरित्र निर्माण पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने का आह्वान किया। उन्होंने उदाहरणों से यह समझाने का प्रयास किया कि भारतीय चिंतन परंपरा व आत्मावलोकन ही चरित्र निर्माण के मूल में हैं। संचालन डा. नैनिहाल मौतम ने किया। डा. अतुल कोठारी ने प्रतिभागियों द्वारा दिए गए सुझावों का सम्यक चर्चा की।

जीवन में सिद्धांत एवं व्यवहार का समन्वय आवश्यक: डॉ. कोठारी

विवि राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी में तीसरे दिन परिचर्चा एवं शोध पत्रों का वाचन

जागरण न्यूज, सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास पर पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी के तृतीय दिवस का प्रथम सत्र परिचर्चा सत्र के साथ आरम्भ हुआ। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, डॉ. अतुलभाई कोठारी और अशोक कट्टेल प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। परिचर्चा सत्र में चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय हरियाणा से डॉ. धर्मवीर, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय से डॉ. संजय शर्मा तथा शशि कुमार सिंह ने अपने संस्थानों में चरित्र निर्माण हेतु किए जा रहे अनेक प्रयासों की प्रस्तुति दी।

इसमें नशामुक्ति, गुणवत्तापूर्ण शोध के साथ साहित्यिक चोरी से मुक्ति तथा कैपस टू कम्प्युनिटी कनेक्ट प्रोग्राम के साथ चरित्र निर्माण के अनेक प्रयासों की चर्चा की गई। सत्र की अध्यक्षता कर रही अटल बिहारी वाजपेई हिंदी विश्वविद्यालय भोपाल के इंदौर अध्ययन केंद्र की संयोजक श्रीमति शोभा पैठणकर ने कहा कि इन प्रयासों



के साथ अन्य नए नवाचार की भी आवश्यकता है। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि व्यक्ति अपने ज्ञान एवं मानवीय चेतना के आधार पर अपने व्यक्तित्व और चरित्र का निर्माण करता है। कार्यशाला के नवमं सत्र में देश भर से आए हुए अनेक प्रतिभागियों ने कार्यक्रम के संबंध में स्वयं के अनुभव साझा किए। अतुल कोठारी ने शिक्षण अधिगम में नवाचार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अध्ययन तथा चरित्र निर्माण पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने का आह्वान किया। उन्होंने अनेक उदाहरणों से यह समझाने का प्रयास किया कि भारतीय चिंतन परंपरा व आत्मावलोकन ही चरित्र निर्माण के मूल में हैं। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और चरित्र निर्माण और भारतीय परंपरा पर केंद्रित पोस्टर का निर्माण किया। प्रतियोगिता में अभिषेक उपाध्याय प्रथम, कृष्णा गौड़ द्वितीय और आर्या जैन तथा स्वीटी सोनी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विजयी प्रतिभागियों को मंचासीन अतिथियों द्वारा पुरस्कृत भी किया गया।

विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी

जीवन में सिद्धांत एवं व्यवहार का समन्वय आवश्यक: अतुल कोठारी

तीसरे दिन परिचर्चा एवं शोध पत्रों का वाचन

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय और शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास पर कार्यशाला के तीसरे दिन विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, डॉ. अतुलभाई कोठारी और अशोक कडेल प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

परिचर्चा सत्र में चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, हरियाणा से डॉ. धर्मवीर, स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय से डॉ. अजय तिवारी व डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय डॉ. संजय शर्मा, शशि कुमार सिंह ने अपन-अपने संस्थानों में चरित्र निर्माण के लिए किए जा रहे प्रयासों की प्रस्तुति दी। शोभा पैटणकर ने का कहा कि इन प्रयासों के साथ अन्य नए नवाचार की भी



चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास पर कार्यशाला के तीसरे दिन हुए कार्यक्रम।

आवश्यकता है। इसके साथ ही जो प्रयास अन्य विश्वविद्यालयों में भी हो रहे हैं, उन्हें हमें अपने विश्वविद्यालयों में भी करना चाहिए। कार्यशाला के नवें सत्र में देश भर से आए हुए अनेक प्रतिभागियों ने कार्यक्रम के संबंध में स्वयं के अनुभव साझा किए।

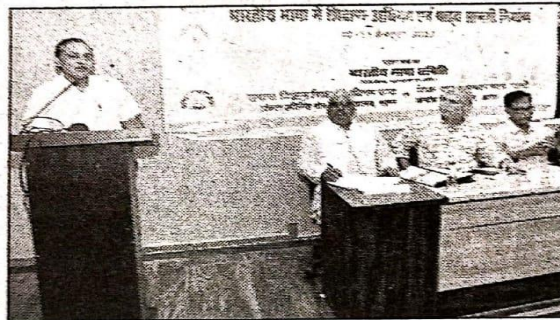


देश को एक सूत्र में पिरोने के लिए परस्पर भाषाई संवाद आवश्यक: मनीष वर्मा

राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी में हुए विविध व्याख्यान

जागरण न्यूज, सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विवि भारतीय भाषा समिति, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास एवं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में पाँच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में भारतीय भाषा में शिक्षण अधिगम एवं पाठ्य सामग्री निर्माण पर शोध संगोष्ठी में मुख्य वक्ता प्रो. अंबिका दत्त शर्मा ने कहा कि गांधी स्वतंत्र भारत को अंग्रेजी से मुक्त करना चाहते थे और हिंदी या भारतीय भाषाओं को भारत में चाहते थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय भाषा नीति या निरापद भाषा नीति का दावा करती है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में भाषा के नाम पर देश का आत्मविभाजन हुआ। ज्ञान के कुछ अनुशासनों का चरित्र राष्ट्रीय होता है। उन्होंने कहा कि अनुभूति, भाषा, भाषा का तर्कशास्त्र, अवधारणीकरण का तारतम्य बना रहना चाहिए। भारत देश का चरित्र आदर्श से बहुभाषिक रहा है। किसी भाषा की समृद्धि उसकी बोलने वालों की संख्या से नहीं



अपितु उसमें रचित वांगमय में निहित ज्ञान से होती है। हमें नई शिक्षा नीति की भाषा नीति के क्रियान्वयन में लगना चाहिए। भारत में राज्यों का गठन भाषा के आधार पर हुआ था। इससे राष्ट्र की सर्वमान्य भाषा के रूप में हिंदी का स्थान विवादित हो गया। इससे भारत में भाषा की समस्या जटिल हो गई हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ाने के लिए कई संस्थाओं का निर्माण हुआ। भारतीय भाषा समिति के वरिष्ठ सलाहकार डॉ. राकेश सिंह ने भारतीय भाषा समिति के चल रहे प्रकल्पों की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि भारतीय भाषाओं में

निर्मित होने वाली पाठ्य सामग्री के संदर्भग्रंथ क्या हों इस पर भी विचार की आवश्यकता है। प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने अध्यक्षीय उद्घोषण में कहा कि लोक साहित्य में व्याप्त ज्ञान को पाठ्यक्रम में ग्रहण किया जाना चाहिए। मंच पर लोक शिक्षण विभाग के संयुक्त संचालक सागर संभाग डॉ. मनीष वर्मा उपस्थित रहे। संचालन डॉ. संजय शर्मा ने किया। द्वितीय सत्र भारतीय भाषाओं में एकात्मकता एवं संवाद विषय पर हुआ। मुख्य वक्ता डॉ. निरंजन सहाय ने अपने वक्तव्य के दौरान कहा कि भारत में अनेक भाषाएं प्रेमपूर्वक सामंजस्य के साथ रहती रहीं। सरहपा की मातृभाषा उड़िया या बांग्ला थी। उन्होंने मगध के क्षेत्र में कार्य किया और तत्पश्चात वे कर्नाटक चले गए उन्होंने बांग्ला, मैथिली, कन्नड़ में साहित्य रचा इसमें एकात्मकता स्पष्ट होती है। भक्ति दक्षिण भारत में उपजी उसका उत्तर भारत में भी विस्तार हुआ। विभिन्न हिंदी के कवियों की रचनाओं में इसकी अभिव्यक्ति देखने को मिलती है, जिसमें संत कबीर का प्रमुख स्थान है।

भारतीय बोध के साथ हो चरित्र व व्यक्तित्व निर्माण : कुलाधिपति

विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी का उद्घाटन

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास पर पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी का उद्घाटन विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में हुआ। विधि के कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी के सारस्वत साध्व्य में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुलभाई कोठारी सारस्वत वक्ता के रूप उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की। ज्ञान की देवी सरस्वती एवं डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ संगोष्ठी का शुभारम्भ हुआ। प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि यह भारत के निर्माण की कार्यशाला है जिसका निश्चित लक्ष्य है। इस



कार्यशाला की शुरुआत से ही विश्वविद्यालय के छात्रों से शोध कार्यक्रम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के वैल्यू एडेड पाठ्यक्रम लागू हो जाएगा। डॉ. शशिकुमार सिंह ने पांच दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा और सत्रों का संक्षिप्त विवरण दिया।

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने कार्यशाला के विषय को आज के समय में महत्वपूर्ण बताया। डिजिटल युग में भारतीय बोध के

साथ व्यक्तित्व निर्माण करना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति में व्यक्तित्व के समग्र विकास और चरित्र निर्माण के विषय में उल्लिखित बिन्दुओं पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि नीति के क्रियान्वयन हेतु पहली बार भारतीय भाषा, बहुविधवाद, व्यवसायवाद को प्रमुख रूप से इस नीति में रखा गया है। इससे परीक्षण पद्धति में सुधार होगा। उन्होंने कहा कि सभी विश्वविद्यालय को भारतीय शिक्षा पद्धति के

विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करनी चाहिए। डॉ. अतुल भाई कोठारी ने कहा कि भारत में व्यक्तित्व, चरित्र के आधार पर नापा जाता है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण, नैतिक मूल्यों का ह्रास, हत्या आदि सभी समस्याओं का मूल कारण चरित्र से संबंधित है। हम यहां पर समाधानों की चर्चा करने आए हैं और चरित्र निर्माण इसका आधार है। इसकी शुरुआत माल्यावस्था से होती है। बच्चे देखकर सीखते हैं और धीरे धीरे आदतों का अनुकरण करते हैं जो आगे चलकर चरित्र बनाता है। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता भारत में पहली बार इस तरह की पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन हो रहा है। करीब 7 राज्यों से यहां प्रतिभागी उपस्थित हुए हैं। कोविड के समय से ही इसके क्रियान्वयन पर सतत चर्चा हो रही है। उन्होंने कहा कि भारतीय चिंतन परंपरा में व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण स्थान है। आज के समय में विद्यार्थियों में श्रेष्ठ गुणों का समावेश होना चाहिए। इन गुणों में संतुलन, उच्च विचार एवं आत्म विद्याएं ऐसे गुण हैं जो चरित्र निर्माण करते हैं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण विद्यार्थी डिग्री के

साथ समाज में उत्तम चरित्र के साथ प्रवेश करें क्योंकि समाज से ही देश बनता है।

अपराह के सत्र में प्रो. चांद किरण सलूजा ने अपने उद्घोषण में कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रथम अध्याय के अंत में स्पष्ट है कि बच्चे को शिक्षक एवं अभिवाक मिलकर उसकी संवेदनशीलता के साथ पहचानें और फिर उसके विकास के बारे में सोचें। हमें शिक्षा के द्वारा व्यक्ति को अच्छे इंसान और उसके समग्र विकास पर जोर देना चाहिए।

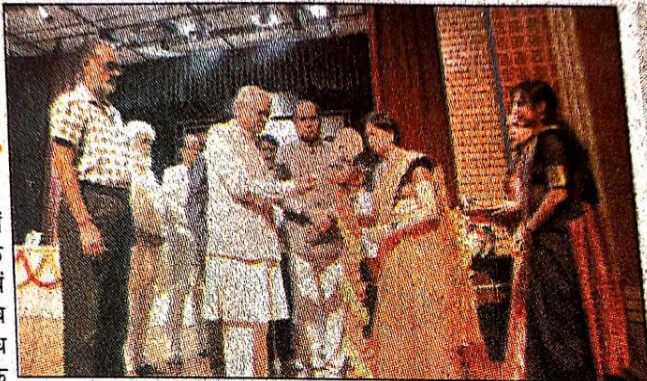
संगोष्ठी के विभिन्न उपविषयों पर आधारित पोस्टर प्रतियोगिता एवं प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया है जो आज से ही प्रतिभागियों के लिए योग अभ्यास सत्र एवं संवाद सत्र भी रखा गया है। कार्यशाला में स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं छात्रों द्वारा आत्मनिर्भर भारत प्रदर्शनी भी लगाई गई है और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास संबंधी पुस्तकों की भी प्रदर्शनी लगाई गई है। इस पंचदिवसीय आयोजन में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये जा रहे हैं तथा विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार भी दिया जाएगा।

चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व के समग्र विकास पर शुरू हुआ मंथन और विमर्श

विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी का उद्घाटन

जागरण न्यूज़, सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास पर पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी का उद्घाटन विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में हुआ। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी के सारस्वत साध्व्य में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुलभाई कोठारी सारस्वत वक्ता के रूप उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति अध्यक्षता प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की। समारोह में रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर के कुलपति प्रो. कपिलदेव मिश्रा, संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान, नई दिल्ली से प्रो. चांद किरण सलूजा एवं पूर्णिया विश्वविद्यालय, बिहार के कुलपति प्रो. राजनाथ यादव की सारस्वत उपस्थिति रही। साथ ही स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. अजय तिवारी, मप्र हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के अध्यक्ष अशोक कडेल, छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा भी मंचासीन थे। ज्ञान की देवी सरस्वती एवं डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप



प्रज्ज्वलन के साथ संगोष्ठी का शुभारम्भ हुआ। प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि यह भारत के निर्माण की कार्यशाला है जिसका निश्चित लक्ष्य है। डॉ. शशिकुमार सिंह ने पांच दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा और सत्रों का संक्षिप्त विवरण दिया। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने कार्यशाला के विषय को महत्वपूर्ण बताया। डिजिटल युग में भारतीय बोध के साथ व्यक्तित्व निर्माण करना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति में व्यक्तित्व के समग्र विकास और चरित्र निर्माण के विषय में उल्लिखित बिन्दुओं पर चर्चा की। डॉ. अतुल भाई कोठारी ने कहा कि भारत में व्यक्तित्व, चरित्र के आधार पर नापा जाता है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण, नैतिक मूल्यों का ह्रास, हत्या आदि सभी समस्याओं का मूल कारण चरित्र से संबंधित है।

भारतीय चिंतन परंपरा है प्रासंगिक : कुलपति

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि आज के समय में विद्यार्थियों में श्रेष्ठ गुणों का समावेश होना चाहिए। प्रो. कपिल देव मिश्रा ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने विद्यार्थियों के एक हथ में ज्ञान और कोशल को रखा है। वहीं, दूसरे हथ में चरित्र और आचरण को। प्रो. राजनाथ यादव ने भारत में शिक्षा नीतियों का क्रमशः इतिहास बताते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के विविध आयामों को बताया। अपराह सत्र में प्रो. चांद किरण सलूजा ने अपने उद्घोषण में कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रथम अध्याय के अंत में स्पष्ट है कि बच्चे को शिक्षक एवं अभिवाक मिलकर उसकी संवेदनशीलता के साथ पहचानें और फिर उसके विकास के बारे में सोचें। मनोहर भंडारी ने अपने अग्रमनकोष विषय पर बोलते हुए कहा कि अन्न से उत्पन्न, अन्न के आधार एवं अन्न से पुष्ट को अग्रमन कोष कहते हैं। संगोष्ठी के विभिन्न उपविषयों पर आधारित पोस्टर प्रतियोगिता एवं प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया है जो आज से ही प्रतिभागियों के लिए योग अभ्यास सत्र एवं संवाद सत्र भी रखा गया है।

चरित्र निर्माण में सात्विक आहार एवं सत्य आचरण की महत्वपूर्ण भूमिका : प्रो बिहारी लाल शर्मा

प्रवेश संवाद सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास पर आयोजित पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के दूसरे दिन प्रथम सत्र चरित्र निर्माण गीत निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र निर्माण न भूलें... के साथ आरम्भ हुआ। इस सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. बिहारी लाल शर्मा थे एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अतुल भाई कोठारी ने की। मुख्य वक्ता लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय दिल्ली के प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने अपने वक्तव्य में पंचकोश की आध्यात्मिक दृष्टि पर बात की। उन्होंने मानव के चरित्र निर्माण हेतु धर्म पर बल देने की बात की और साथ ही भारतीय शिक्षा में पाश्चात्य प्रभाव के कारण उत्पन्न दोषों को रेखांकित करते हुए भारतीय सनातन परंपरा के मुख्य बिंदुओं को भूल जाने की प्रवृत्ति की आलोचना की साथ ही 1835 ई. के पश्चात की आधुनिक शिक्षा नीति के नाम पर अपने आत्मगौरव को भुलाकर पश्चात्य चिंतन की ओर आकृष्ट होने के दुष्परिणामों को भी उन्होंने अपने चर्चा में शामिल किया। उन्होंने कहा कि किसी भी उत्तम राष्ट्र का निर्माण वहां के उत्तम चरित्र वाले व्यक्तियों से होता है। आज हम साक्षर तो हो रहे हैं परंतु शिक्षित नहीं हो रहे हैं। यह अपने आत्मगौरव को भूलने का परिणाम है।



मन पर नियंत्रण जीवन में उचित मार्ग प्रशस्त करता है : प्रो. सलूजा

मुख्य वक्ता के रूप में द्वितीय तकनीकी सत्र में संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान नई दिल्ली के प्रो. चांद किरण सलूजा ने अपना वक्तव्य मनोमयकोश पर दिया। सत्र की अध्यक्षता प्रो. गणेश शंकर गिरी ने की। प्रो. सलूजा ने मनोमयकोश के संबंध में नई शिक्षा नीति के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। उन्होंने मनोमयकोश के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्षों पर चर्चा करते हुए कहा कि मन पर नियंत्रण के द्वारा हम अपने जीवन को उचित मार्ग की ओर अग्रसर कर सकते हैं। साथ ही इसके द्वारा व्यक्तित्व का समग्र विकास हो सकता है। वहीं तृतीय सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. मनोहर भंडारी ने अपना वक्तव्य दिया। डॉ. भंडारी ने कहा कि चिकित्सा शिक्षा में अवलोकन और मनोविज्ञान की शिक्षा आवश्यक है लेकिन हमारे देश का दुर्भाग्य है कि चिकित्सा शिक्षा में आज भी मनोविज्ञान की शिक्षा नहीं दी जाती है। यही कारण है कि मानव जीवन में पंचकोश अत्यंत महत्वपूर्ण है।

लोकतांत्रिकता शिक्षा की सबसे बड़ी विशेषता: अतुल कोठारी

चतुर्थ सत्र में मुख्य वक्ता डॉ. अतुलभाई कोठारी ने आनंदमय कोश की अवधारणा को व्याख्यायित किया। अध्यक्षता विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की। उन्होंने कहा कि आनंदमय कोश हमें समग्रता की ओर ले जाता है। पूरी पंचकोश की प्रक्रिया स्वयं को पहचानने की प्रक्रिया है। आम तौर पर इस पर चर्चा नहीं होती लेकिन यह अपने आप में एक विज्ञान है। उन्होंने कहा कि मनुष्य के भीतर इतनी क्षमता है कि वह हर समस्या का समाधान ढूंढ सकता है लेकिन कई बार वह अपनी इस क्षमता को नहीं पहचान पाता। इसलिये व्यक्ति को सबसे पहले स्वयं को पहचानने की आवश्यकता है। अध्यक्षता करते हुए विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि मन को व्यवस्थित रखने में और दैनिक चुनौतियों का सामना करने में ओम्कार की ध्वनि सहायक होती है। श्वसन क्रिया को ठीक रखने में भी यह सहायक होता है।

‘गांधी देश को अंग्रेजी से मुक्त करना चाहते थे’

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय और भारतीय भाषा समिति शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के तत्वावधान में पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के चौथे दिन मुख्य वक्ता प्रो. अंबिका दत्त शर्मा ने कहा कि गांधी स्वतंत्र भारत को अंग्रेजी से मुक्त करना चाहते थे और हिंदी या भारतीय भाषाओं को भारत में चाहते थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय भाषा नीति या निरापद भाषा नीति का दावा करती है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में भाषा के नाम पर देश का आत्मविभाजन हुआ। प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि लोक साहित्य में व्याप्त ज्ञान को पाठ्यक्रम में ग्रहण किया जाना चाहिए। द्वितीय सत्र में मुख्य वक्ता



डॉ. निरंजन सहाय ने कहा कि भारत में अनेक भाषाएं प्रेमपूर्वक सामंजस्य के साथ रहती रहीं। सरहपा की मातृभाषा उड़िया या बांग्ला थी। उन्होंने मगध के क्षेत्र में कार्य किया और तत्पश्चात वे कर्नाटक चले गए। उन्होंने बांग्ला, मैथिली, कन्नड़ में साहित्य रचा। इसमें एकात्मकता स्पष्ट होती है। प्रो. निरंजन सहाय ने कहा कि भाषा कभी बिगड़ती नहीं है। बदलती है। उसका स्वरूप बदलता है। इससे उसके मानक भी बदलते हैं।

राशनल हुए।

पुछा कराए ताक सड़क निमाण पक्षात तिसा भा प्रकार का तोड़-फोड़ न करना पड़े।

सकूल में किए जा रहे विकास कार्यों का भी निरीक्षण किया।

समग्र व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण पर विवि में चल रहा सार्थक विमर्श

राष्ट्रीय कार्यशाला और शोध संगोष्ठी में दूसरे दिन हुए महत्वपूर्ण व्याख्यान

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास पर पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी के द्वितीय दिवस का प्रथम सत्र चरित्र निर्माण गीत निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र निर्माण न भूलें के साथ आरम्भ हुआ। इस सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. बिहारी लाल शर्मा थे एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अतुल भाई कोठारी ने की।

प्रथम सत्र के मुख्य वक्ता लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय दिल्ली के प्रो. बिहारी लाल शर्मा रहे। इस तकनीकी सत्र की अध्यक्षता अतुल भाई कोठारी ने की। इसके समन्वयक डॉ. नौनिहाल गौतम रहे और प्रतिवेदक गोविंद सिंह रहे। मुख्य वक्ता ने अपने वक्तव्य में पंचकोशी की आध्यात्मिक दृष्टि पर बात की। उन्होंने मानव के चरित्र निर्माण हेतु धर्म पर बल देने की बात की और साथ ही भारतीय शिक्षा में पाश्चात्य प्रभाव के कारण उत्पन्न दोषों को रेखांकित करते हुए भारतीय सनातन परंपरा के मुख्य बिंदुओं को भूल जाने की प्रवृत्ति



की आलोचना की। अध्यक्षीय वक्तव्य श्री भाई अतुल कोठारी ने दिया। मुख्य वक्ता के रूप में द्वितीय तकनीकी सत्र में संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान नई दिल्ली के प्रो. चांद किरण सलूजा ने अपना वक्तव्य मनोमयकोश पर दिया। सत्र की अध्यक्षता प्रो. गणेश शंकर गिरी ने की। प्रो. सलूजा ने मनोमयकोश के संबंध में नई शिक्षा नीति के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा

की। तृतीय सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. मनोहर भंडारी इंदौर ने वक्तव्य दिया। डॉ. भंडारी ने कहा कि चिकित्सा शिक्षा में अवलोकन और मनोविज्ञान की शिक्षा आवश्यक है लेकिन हमारे देश का दुर्भाग्य है कि चिकित्सा शिक्षा में आज भी मनोविज्ञान की शिक्षा नहीं दी जाती है।

अध्यक्षता करते हुए विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि मन को व्यवस्थित रखने में और दैनिक चुनौतियों का सामना करने में ओमकार की ध्वनि सहायक होती है। श्वसन क्रिया को ठीक रखने में भी यह सहायक होता है। उन्होंने कहा कि जहां समस्या है, वहां समाधान भी होता है। हमें समाधान पर बात करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि आजकल हर अवसर पर केक काटना प्रचलन में है जो पाश्चात्य पद्धति है। हमारी संस्कृति हमें जोड़ना सिखाती है, काटना नहीं। स्वयं चरित्रवान बनें तभी आप दूसरों को भी चरित्र के बारे में सिखा पाएंगे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शशि कुमार सिंह ने किया। कार्यक्रम में देश भर के कई राज्यों से आये प्रतिभागी, शोधार्थी, विद्यार्थी एवं शिक्षक उपस्थित रहे।

भारत देश का चरित्र आरंभ से बहुभाषिक रहा है

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास एवं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में भारतीय भाषा में शिक्षण अधिगम एवं पाठ्य सामग्री निर्माण पर शोध संगोष्ठी में मुख्य वक्ता प्रो. अंबिका दत्त शर्मा ने कहा कि गांधी स्वतंत्र भारत को अंग्रेजी से मुक्त करना चाहते थे और हिन्दी या भारतीय भाषाओं को भारत में चाहते थे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय भाषा नीति या निरापद भाषा नीति का दावा करती है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में भाषा के नाम पर देश का आत्मविभाजन हुआ। ज्ञान के कुछ अनुशासनों का चरित्र राष्ट्रीय होता है। उन्होंने कहा कि अनुभूति, भाषा, भाषा का तर्कशास्त्र, अवधारणीकरण का तारतम्य बना रहना चाहिए।

भारत देश का चरित्र आरंभ से बहुभाषिक रहा है। किसी भाषा की समृद्धि उसकी बोलने वालों की संख्या से नहीं बल्कि उसमें रचित वाग्मय में निहित ज्ञान से होती है। हमें नई शिक्षा नीति की भाषा नीति के क्रियान्वयन में लगना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत में राज्यों का गठन भाषा के आधार पर हुआ था। इससे राष्ट्र की सर्वमान्य भाषा के रूप में हिन्दी का स्थान विवादित हो गया। इससे भारत में भाषा की समस्या जटिल हो गई

हिन्दी की स्वीकार्यता को बढ़ाने के लिए कई संस्थाओं का निर्माण हुआ। भारतीय भाषा समिति के वरिष्ठ सलाहकार डा. राकेश सिंह ने भारतीय भाषा समिति के चल रहे प्रकल्पों की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि भारतीय भाषाओं में निर्मित होने वाली पाठ्य सामग्री के संदर्भग्रंथ क्या हों इस पर भी विचार की आवश्यकता है।

भाषा निरंतर समृद्ध होनी चाहिए: द्वितीय सत्र भारतीय भाषाओं में एकात्मकता एवं संवाद विषय पर हुआ। मुख्य वक्ता डा. निरंजन सहाय ने कहा कि भारत में अनेक भाषाएं प्रेमपूर्वक सामंजस्य के साथ रहती रहीं हैं। भक्ति दक्षिण भारत में उपजी उसका उत्तर भारत में भी विस्तार हुआ।

विभिन्न हिन्दी के कवियों की रचनाओं में इसकी अभिव्यक्ति देखने को मिलती है, जिसमें संत कबीर का प्रमुख स्थान है। उन्होंने कहा कि तेलुगु भाषी वल्लभाचार्य संस्कृत में लिखते थे और ब्रज वासियों से ब्रज भाषा में बात करते थे। डा. मनीष वर्मा ने कहा कि भाषा निरंतर समृद्ध होनी चाहिए। पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने के लिए परस्पर भाषाई संवाद आवश्यक है, उन्होंने पाठ्य पुस्तकों को समझाने के लिए स्थानीय भाषाओं के शब्दों के प्रयोग पर बल दिया। विविधता में एकता भारत की शक्ति है, विविधताओं का सम्मान किया जाना चाहिए, स्वाध्याय को बढ़ाने

के प्रयास किए जाने चाहिए। इस सत्र की अध्यक्षता डा. मनीष वर्मा ने की। संचालन डा. शशिकुमार सिंह ने किया।

भाषा शिक्षण का तरीका कक्षाओं के स्तर के साथ बदलता रहता है: तृतीय सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने भाषा शिक्षण की रणनीति पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भाषा शिक्षण का तरीका कक्षाओं के स्तर के साथ बदलता रहता है। बच्चों में भाषा की संस्कृति का बोध विकसित करना। प्राचीन साहित्य और लोक साहित्य की वर्तमान सन्दर्भों में व्याख्या की जानी चाहिए। भाषाओं कभी समय के साथ रंग-रूप, तेवर बदलता रहता है। तकनीक के कारण भी भाषा के लेखन का संकट या चुनौती उपस्थित हुई है।

विद्यार्थियों के श्रुतलेखन, अर्थबोध, कल्पना बोध, सृजनात्मकता को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। प्रो. निरंजन सहाय ने कहा कि भाषा कभी बिगड़ती नहीं है, बदलती है। उसका स्वरूप बदलता है। इससे उसके मानक भी बदलते हैं। विशिष्ट अतिथि के रूप में डा. राकेश सिंह उपस्थित थे एवं संचालन डा. धर्मेन्द्र कुमार सराफ ने दिया। चतुर्थ सत्र में मुख्य वक्ता सुश्री विनीता काम्बीर शिक्षा निदेशालय नई दिल्ली ने भाषा अधिगम शिक्षण पर व्याख्यान दिया। संचालन डॉ संजय शर्मा ने किया।

विश्वविद्यालय • पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी के समापन के अवसर पर प्रो. कुमार रत्नम ने कहा-

औपनिवेशिक मानसिकता व व्यवस्था से मुक्ति राष्ट्रीय शिक्षा नीति का लक्ष्य

भारत संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, भारतीय भाषा समिति शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास एवं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का मंगलवार को समापन हो गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. कुमार रत्नम ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्माण में विश्व में सबसे बड़ा सैपल साइज लिया गया। इतिहास, संस्कृति और संस्कारों का उल्लेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति की समग्रता को स्पष्ट करता है। पूर्व की शिक्षा व्यवस्था द्वारा औपनिवेशिक मानसिकता और व्यवस्थाओं का निर्माण हमारे मस्तिष्क में किया गया था उससे मुक्ति के प्रति राष्ट्रीय शिक्षा नीति अप्रसर है।

भारत भाषिक विविधताओं से संपन्न राष्ट्र है : कुलपति

अध्यक्षीय वक्तव्य में विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि हम हिंदुस्तानियों के रंग-रंग में हिंदी भाषा समाहित है और हम हिंदी भाषा को सम्पूर्ण विश्व में प्रसारित करेंगे। एक दिन ऐसा अवश्य आएगा जब सम्पूर्ण विश्व में यह कहा जायेगा कि हिंदी भाषा का ज्ञान आवश्यक है। आज मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई भी हिन्दी माध्यम से किये जाने की नीति बन रही है। उन्होंने कहा कि भाषा का महत्त्व हमारे जीवन में हमेशा रहता है और हमारी अपनी भाषा ही हमें समृद्धि और विकास के रास्ते पर ले जा सकने में सक्षम है।

भारतीय भाषा समिति के वरिष्ठ सलाहकार डॉ. राकेश सिंह ने कहा कि भारतीय भाषा समिति भारत की तमाम भाषाओं पर कार्य कर रही है जिसमें 235 भाषाओं पर कार्य आरंभ हो चुका है। अंतरराष्ट्रीय उपनिवेशक तंत्र विलुप्त होती लिपियों के प्रति हमें भ्रमित करने का प्रयास कर रहा है। इससे हमें बचना होगा। भारतीय भाषाओं का भविष्य उज्ज्वल है। इस अवसर पर विवि के कुलसचिव संतोष सोहगौरा, कुलानुशासक प्रो. चंदा बेन भी मंचासीन थे। व्याख्यान सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. निरंजन सहाय ने कहा कि भारत में पांच परिवारों की भाषाएं बोली और बरती जाती हैं। ऐसा यह इकलौता देश है। 2011 की जनगणना के अनुसार 211 भाषाएं हैं। भारत में। व्यवहार भाषा की समस्या कभी नहीं रही। भारत में प्रायः प्रत्येक व्यक्ति



बहुभाषी हुआ करता है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान क्रांतिकारियों को व्यवहार भाषा हिंदी रही। उन्होंने भाषाओं के आधार पर राज्यों के निर्माण को ऐतिहासिक प्रक्रिया को समझाया। भाषायी आधार पर राज्यों के गठन हेतु आयोगों की आवश्यकता और उसके कार्यों को बताया। उन्होंने बहुभाषिकता, 8वीं अनुसूची, राजभाषा, राष्ट्रभाषा और बोली पर विस्तार से चर्चा की।

बैंक ऑफ बडौदा ने किया हिन्दी के मेधावी छात्रों को पुरस्कृत

समारोह में बैंक ऑफ बडौदा ने विश्वविद्यालय के हिन्दी विषय के मेधावी छात्रों को पुरस्कृत किया। बैंक ऑफ बडौदा के क्षेत्रीय प्रबंधक संतोष कुमार एवं मंचासीन अतिथियों ने हिन्दी विषय के बालक और बालिका वर्ग के एक-एक मेधावी छात्र मुकेश पुवारे और लेखनी सुमन को 11-11 हजार रुपये और स्मृति चिन्ह देकर पुरस्कृत किया। डॉ. आशुतोष को बैंक ऑफ बडौदा का बुंदेलखंड साहित्य सम्मान समारोह में बैंक ऑफ बडौदा ने डॉ. आशुतोष, सहायक प्राध्यापक हिन्दी विभाग को उनके साहित्य में योगदान के लिए बैंक ऑफ बडौदा-बुंदेलखंड साहित्य सम्मान प्रदान किया। इस अवसर पर उन्हें 31 हजार रुपये पुरस्कार राशि और प्रशस्ति-पत्र और शाल श्री फल देकर सम्मानित किया गया। संचालन डॉ. संजय शर्मा ने किया और आभार डॉ. शशिकुमार सिंह ने प्रस्तुत किया।

पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी का समापन



जागरण न्यूज, सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय भारतीय भाषा समिति शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास एवं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में भारतीय भाषा में शिक्षण अधिगम एवं पाठ्य सामग्री निर्माण पर शोध संगोष्ठी में समापन वक्तव्य देते हुए मुख्य अतिथि प्रो. कुमार रत्नम ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति

के निर्माण में विश्व में सबसे बड़ा सैपल साइज लिया गया। इतिहास, संस्कृति और संस्कारों का उल्लेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति की समग्रता को स्पष्ट करता है। अध्यक्षीय वक्तव्य में विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि पहले इस कार्यशाला की संकल्पना तीन दिवसीय की गई थी। सभी सत्र पूर्ण संख्या में सफलता पूर्वक संपन्न हुए। भारतीय भाषा समिति के वरिष्ठ सलाहकार डॉ. राकेश सिंह ने कहा कि भारतीय भाषा समिति भारत की तमाम भाषाओं पर कार्य कर रही है जिसमें 235 भाषाओं पर कार्य आरंभ हो चुका है। इस अवसर पर विवि के कुलसचिव संतोष सोहगौरा, कुलानुशासक प्रो. चंदा बेन भी मंचासीन थे। व्याख्यान सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. निरंजन सहाय ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत में पांच परिवारों की भाषाएं बोली और बरती जाती हैं। ऐसा यह इकलौता देश है। 2011 की जनगणना के अनुसार 211 भाषाएं हैं। भारत में व्यवहार भाषा की समस्या कभी नहीं रही।

पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी का समापन



सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय भारतीय भाषा समिति शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास एवं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में भारतीय भाषा में शिक्षण अधिगम एवं पाठ्य सामाग्री निर्माण पर शोध संगोष्ठी में समापन वक्तव्य देते हुए मुख्य अतिथि प्रो. कुमार रत्न ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्माण में विश्व में सबसे बड़ा सैंपल साइज लिया गया। इतिहास, संस्कृति और संस्कारों का उल्लेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति की समग्रता को स्पष्ट करता है। अध्यक्षीय वक्तव्य में विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि पहले इस कार्यशाला की संकल्पना तीन दिवसीय की गई थी। सभी सत्र पूर्ण संख्या में सफलता पूर्वक संपन्न हुए। भारतीय भाषा समिति के वरिष्ठ सलाहकार डॉ. राकेश सिंह ने कहा कि भारतीय भाषा समिति भारत की तमाम भाषाओं पर कार्य कर रही है जिसमें 235 भाषाओं पर कार्य आरंभ हो चुका है। इस अवसर पर विवि के कुलसचिव संतोष सोहगौरा, कुलानुशासक प्रो. चंदा बेन भी मंचासीन थे। व्याख्यान सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. निरंजन सहाय ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत में पांच परिवारों की भाषाएं बोली और बरती जाती है। ऐसा यह इकलौता देश है। 2011 की जनगणना के अनुसार 211 भाषाएं हैं। भारत में व्यवहार भाषा की समस्या कभी नहीं रही।

महासचिव पाटल पुस्तकालय
उपस्थित होने का अनुरोध किया है।

मेधावी विद्यार्थियों एवं साहित्यकारों का सम्मान



सागर, आचरण। बैंक ऑफ बड़ौदा, सागर क्षेत्र द्वारा 11-10-2022 को बैंक की महत्वाकांक्षी योजना बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान के तहत डॉ. हरि सिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय सागर के स्नातकोत्तर (एम. ए.) हिन्दी के अंतिम वर्ष की परीक्षा में प्रावीण्य सूची में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्तकर्ता विद्यार्थियों क्रमशः मुकेश पुवारे एवं सुश्री लेखनी सुमन को संतोष कुमार (उप क्षेत्रीय प्रमुख) सागर क्षेत्र द्वारा रुपये 11000/- एवं रुपये 7500/- का चेक तथा प्रशस्ति पत्र तथा मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर बैंक के भोपाल अंचल की महत्वाकांक्षी योजना क्षेत्रीय स्तर पर साहित्यकारों का सम्मान के अंतर्गत बैंक के सागर क्षेत्र द्वारा सागर के राष्ट्रीय स्तर के युवा कहानीकार, नाटककार, रंगकर्मी एवं समीक्षक डॉ. आशुतोष मिश्रा को 'बॉब बुदेलखंड राजभाषा गौरव सम्मान के तहत उप क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा नगद राशि, शाल, श्रीफल एवं प्रशंसा पत्र तथा स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन बैंक के प्रबन्धक (राजभाषा) शिव कुमार बनखेडे द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. हरि सिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, की कुलपति डॉ. नीलिमा गुप्ता, भारतीय इतिहास अनुसंधान एवं परिषद केंद्र नई दिल्ली के डॉ. कुमार रत्न, सचिव भारतीय भाषा समिति नई दिल्ली के डॉ. राकेश सिंह एवं विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. चंदा बेन के साथ विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, विद्यार्थी एवं बैंक के अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

डॉ. हरीसिंह गौर विवि बने भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन का उत्कृष्ट केंद्र: डॉ. कोठारी

विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी का शुभारंभ

प्रवेश संवाद सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय और शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास पर पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शोध संगोष्ठी का शुभारंभ विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी के सान्निध्य में आयोजित संगोष्ठी में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुलभाई कोठारी मुख्य वक्ता के

रूप उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की। प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि यह भारत के निर्माण की कार्यशाला है। जिसका निश्चित लक्ष्य है। इस कार्यशाला की शुरुआत से ही विश्वविद्यालय के स्नातक से शोध पाठ्यक्रम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के वैल्यू एडेड पाठ्यक्रम लागू हो जाएगा। डॉ. शरित्कुमार सिंह ने पांच दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा और सत्रों का संक्षिप्त विवरण दिया। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने कार्यशाला के विषय को आज के समय में महत्वपूर्ण बताया।

उन्होंने बताया कि नीति के क्रियान्वयन के लिए पहली बार भारतीय भाषा, बहुविधवादा, व्यवस्थितवाद को प्रमुख रूप से इस नीति में

रखा गया है। इसके परीक्षण पद्धति में सुधार होगा। मुख्य वक्ता डॉ. अतुल भाई कोठारी ने कहा कि भारत में व्यक्तित्व, चरित्र के आधार पर नया जाता है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण, नैतिक मूल्यों का हास, हत्या आदि सभी समस्याओं का मूल कारण चरित्र से संबंधित है। हम यहां पर समाधानों की चर्चा करने आए हैं और चरित्र निर्माण इसका आधार है।

भारतीय ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाने का काम इस नीति से हो रहा है। इसके पाठ्यक्रम में पुरी दुनिया की समस्याओं का समाधान है। उन्होंने कहा कि इसका केंद्र बिंदु डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय बन सकता है। सम्मेलन में रात्री दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर के कुलपति प्रो. कपिलदेव मिश्रा, संस्कृत संस्थान प्रतिष्ठान दिल्ली से प्रो. चंद किरण सलूज्जा व पूर्णिमा विश्वविद्यालय, बिहार के

कुलपति प्रो. राजनाथ यादव उपस्थित रहे। इनके साथ स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. अजय तिवारी, मध्य हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के अध्यक्ष अशोक कडेल, छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा भी मंचासीन हुए।

भारतीय चिंतन परंपरा में व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण स्थान: कुलपति

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि करीब 7 राज्यों से यहां प्रतिभागी उपस्थित हुए हैं। कोविड के समय से ही इसके क्रियान्वयन पर सतत चर्चा हो रही है। उन्होंने कहा कि भारतीय चिंतन परंपरा में व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण स्थान है। आज के समय में विद्यार्थियों में गैर गुणों का समावेश होना चाहिए। समाज से ही देश बनता है।

पोस्टर प्रतियोगिता, आत्मनिर्भर भारत एवं पुस्तक प्रदर्शनी में मुख्य आकर्षण

संगोष्ठी के विभिन्न उपविषयों पर आधारित पोस्टर प्रतियोगिता एवं प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जा रहा है। प्रतिभागियों के लिए योग्य अवसर सत्र एवं संवाद सत्र भी रखा गया है। कार्यशाला में स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं छात्रों द्वारा आत्मनिर्भर भारत प्रदर्शनी भी लगाई गई है और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास संबंधी पुस्तकों की भी प्रदर्शनी लगाई गई है। इस पंचदिवसीय आयोजन में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये जाएंगे तथा विविध प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया जाएगा।

राष्ट्रीय सलाहकार समिति

प्रो. आर. के. मित्तल, चौधरी वंशीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी, हरियाणा
प्रो. अमीबेन उपाध्याय, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर मुक्त वि.वि., अमदाबाद
प्रो. रमेश भारद्वाज, महर्षि बाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल
प्रो. आलोक चक्रवाल, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर
प्रो. सरोज शर्मा, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली
प्रो. प्रकाश सी. वर्तुनिया, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ
प्रो. संजय सिंह, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ
प्रो. के. एन. सिंह, दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बोधगया
प्रो. आर. पी. तिवारी, केन्द्रीय विश्वविद्यालय पंजाब, बठिंडा
प्रो. संजीव जैन, केन्द्रीय विश्वविद्यालय जम्मू, जम्मू
प्रो. पी. एस. शुक्ल, नार्थ ईस्ट हिल यूनिवर्सिटी, शिलोंग, मेघालय
श्री अशोक कड़ेल, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
श्री देशराज शर्मा, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, होशियारपुर, पंजाब

आयोजन समिति

संरक्षक

प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
डॉ. अतुलभाई कोठारी, राष्ट्रीय सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, दिल्ली

संयोजक

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
डॉ. अजय तिवारी, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, सागर
प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

आयोजन सचिव

डॉ. शशिकुमार सिंह, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

आयोजन सह-सचिव

डॉ. आशुतोष, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
डॉ. संजय शर्मा, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर



संकलन, चयन एवं संपादन

कार्यालय, मीडिया अधिकारी

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

Email- mediaofficer@dhsgsu.edu.in

Website- www.dhsgsu.edu.in



SagarUniversity



DoctorGour



Doctor Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar